

Baig. P. 4, 10, 10. 5, 26, 24. श्रोतिषी (*die Augen*) कण्ठकेन 9, 3, 4. पौा विध्यति शर्करा: *wund stechen* Schol. zu P. 4, 4, 83. 6, 3, 53. कारुहैर्विध्यती *mit den Nägeln verwundend*, — *kratzend* KATHA. 49, 49. सिराम् *eine Ader schlagen* Suca. 1, 358, 1. विद्याय MBh. 3, 709. 18728. 4, 1694. 1804. 13, 7469. R. 1, 28, 25 (29, 14 Gora.). 3, 34, 27. 30. 5, 31, 30. 39, 20. fg. Spr. 2883. Baig. P. 7, 2, 56. विध्यधु: MBh. 3, 767. अघ्यात्सीत् BHAT. 5, 52. 15, 69. वेत्स्यामि MBh. 13, 4634. लक्ष्यं यो वेदा 1, 6955. med.: नैनं शस्त्राणि विध्यते (so ed. Bomb.) 14, 560. विध्येत य इदं लक्ष्यम् 1, 7004. अविध्यत 4, 1817. विध्यधे 6, 3460. Baig. P. 10, 47, 17. वेत्स्यसे MBh. 13, 4695. विद्वा R. 3, 34, 19. KATHA. 48, 58. विध्य absol. MBh. 16, 96. वेदुम् 1, 5286. 16, 35. R. 6, 79, 46. Baig. P. 10, 83, 21. pass.: शस्त्रेणापि न विध्यते MBh. 2, 948. बालस्य कर्णा विध्यते Suca. 1, 54, 18. KATHA. 40, 12. AK. 3, 3, 36. विध्यमान BHAT. 5, 102. 9, 66. विहं *durchbohrt, durchgeschossen, verwundet, getroffen* AK. 3, 2, 49. H. 1486. an. 2, 249. Med. dh. 16. विहस्यैव पदं नय *folge der Spur des Angeschossenen* AV. 10, 1, 26. विहस्यै पदनीरिव (sonach ist unter पदनी zu setzen *der Spur nachfolgend*) 11, 2, 13. 2, 29, 7. At. Br. 3, 33. M. 9, 48. भृशं MBh. 5, 7178. सुभृशं गाढविह: 7216. 7, 8670. पृष्ठे 13, 2796. 7470. R. 1, 32, 21. 2, 30, 28. R. 6, 28. Ragh. 5, 51. 14, 70. शरशति: Spr. (II) 3593. रोक्ते सम्यक्विहम् (I) 2647. KATHA. 14, 29. 26, 179. fg. 33, 208. 42, 48. 61, 102. Dharmas. 66, 11. Daçak. 88, 1. Baig. P. 2, 7, 8. रुदि डुरुतो: 4, 6, 6. 8, 14. कुशकण्टकं MBh. 3, 16862. Çik. 89. Spr. (II) 1507. Baig. P. 9, 11, 19. PANKAT. 62, 9. कुक्षिने ऽविहनस: *nicht durchstoßen* Baig. P. 3, 3, 4. अविहमुक्तापाल Komāras. 7, 10. कीटै: *durchbohrt* Varāh. Bṛh. 8, 79, 37. Suca. 1, 135, 20. शरदीवाम्बुजं फुल्लं विहं भास्कररश्मिभि: *getroffen von* R. 5, 39, 22. प्रलाम्पम् *gespiess* auf KATHA. 25, 180. प्रलाम्पे 136. क्लेषु Ragh. 9, 60. स्वेरिण्यापाङ्गविहधी: *getroffen von* Baig. P. 6, 1, 68. धर्मो विहस्त्वधर्मेणा समो यत्रोपतिष्ठते । शल्यं चास्य न कृत्तति विहास्तत्र सभासद: ॥ *verwundet, verletzt* Spr. (II) 3136. *beschädigt*: शर्करां (वज्र) Varāh. Bṛh. S. 80, 15. 82, 2. (चामराणि) विहात्पलुप्तानि न शोभनानि 72, 2. तन्निषिष्टपसैकाशमिन्द्रप्रस्थं व्यरोचत । मेघवन्दमिवाकाशे विहं (= मिथ: क्षिष्टे Nilak.) विद्युत्समावृतम् *geborsten* MBh. 1, 7580. विहं = विकुषित (nach Durga) Nir. 4, 15. — 2) *beworfen mit*: क्षिमेनाविध्यदूर्ध्वम् RV. 8, 32, 26. सीत्तेन AV. 1, 16, 4. TS. 1, 7, 8, 2. सर्वतो मामविध्यत (v. l. अचिन्वत्) सरथं धरणीधरै: MBh. 3, 12470. विहं = तिस *geworfen* H. an. Med. — 3) *behaften, Jmd (acc.) Etwas (instr.) anheften, anhängen* (ein Uebel u. s. w.): यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तम्साविध्यदासुरै: RV. 5, 40, 2. TS. 2, 1, 2, 2. 6, 1, 40, 4. Çat. Br. 1, 5, 2, 8. 5, 3, 2, 2. AV. 3, 2, 5. प्रज्ञा उदरेणा Çat. Br. 4, 6, 8, 17. पाप्मना 11, 1, 9, 9. 14, 4, 2, 2. तं कामुरा पाप्मना विविधु: Kāśī. Up. 1, 2, 2, 2. कृत्याया Kauç. 39. पुष्पा At. Br. 6, 86. Çat. Br. 3, 5, 2, 8. लोकिन्तेन AV. 15, 1, 8. बाह्वङ्कै: 11, 9, 12. रघस्तमोभ्यां विहस्य देहिन: Maitrāj. 6, 28. विहं (= उ:खादिसंखन्धिन् Comm.) Kāśī. Up. 3, 4, 2. — 4) *Eintrag thun, beeinträchtigen, nachtheilig wirken auf* Etwas (acc.), *schaden*: अविहवर्चस् Baig. P. 3, 9, 3. अविहदम् 2, 3, 4. मार्गतरुकाणकूपस्तम्भमविहं हारम् Varāh. Bṛh. S. 53, 76. रघ्यां (हार) 77. देवतां (हार) 78. Mitr. P. 50, 70. विहं = बाधित Mitr. — 5) *विहं behaftet, versehen mit Etwas, das schaden kann*: रजोपकरणाद्विहद्वज्रधञ्जचामरादिभिर्विह: (अर्कै: ) Varāh. Bṛh. S. 3, 48. fg. 47, 24. विहद्वज्रपाश

(= अमर्षविहाशय) Baig. P. 7, 10, 15. — 6) *विहं versehen mit überh.: तस्मैस्वरगुणैर्विहानातिम्यान्ववाद्यन्* (तस्मै und विहाम् ed. Calc., तस्मै und विहानातिम्यान् die neuere Ausg.) Hariv. 8688. विहमासारितं (विहं = रगात्तरमिष्य Nilak.) रम्यं जगिरे स्वरसंपदा 8690. die रक्किणी-संहिताष्टमी ist vierfach: प्रुद्धा *rein*, विह्वा *gemischt, mit Anderem in Berührung kommend* (d. i. mit dem Ende des 7ten Tages), प्रुद्धाधिका oder विह्वाधिका WERNER, KRISHNĀ. 227. fg. पूर्वविह्वा 225. 237; vgl. Verz. d. Oxf. H. 283, b, No. 662. — 7) *anstacheln, antreiben, in Bewegung versetzen*: (रजसा) गुणेन कालानुगतेन विह: (= सेतोभित: Comm.) Baig. P. 3, 8, 13. देहेन्द्रियप्राणमनोधिषो ऽमी यदशविह: (विहं = अविष्ट Comm.) प्रचरति कर्मसु 6, 16, 24. — 8) *schütteln, bewegen*: चैलानि विध्यधु: MBh. 1, 7055; vgl. चैलानि डुधुवु: 6, 1587. चैलावधूनन 8, 4386. चैलावेध 2, 2867. — 9) *in der Astron. fixiren, den Stand eines Gestirns bestimmen*: अग्रे पृष्ठतो वा दष्टिं चालयित्वा ग्रहे विध्येत् GOLĀDH. JĀYĀLĀH. 13, Comm. — 10) *sich hängen an*: घातयौ वा घातुति विध्यति Çat. Br. 12, 4, 2, 10. — 14) *विहं ähnlich* H. an. Med. पूर्णान्दु विहानना (विम्ब st. विह Baocch.) Çat. 43. — 12) *विहं fehlerhaft für बह्* Liñga-P. bei MUIR, ST. 4, 328, 28. — Vgl. विध्य, वेहर् fg., वेध fg., वेधिन् fg., व्यध fg., व्यध्य, व्यधर्, व्याध und अयापविह.

— caus. = simpl. 1) काकमवेधयन् MBh. 12, 8069. शीरेष्वप्यवीविधत् (nach der Lesart der ed. Bomb.) 7, 8670. सिरा व्यधयेत् *eine Ader schlagen* Suca. 2, 280, 18. वेधित = विह AK. 3, 2, 49. H. 1486. an. 2, 249. Med. dh. 16.

— desid. *behaften wollen*: पाप्मनाविव्यत्सन् Çat. Br. 14, 4, 2, 8.

— intens. *वेविध्यते* P. 6, 1, 16, Schol.

— अति *durchbohren; durchbrechen, mit Öffnungen versehen* RV. 4, 8, 8, 88, 2. वर्म AV. 2, 5, 19. शर्म नातिविधं dat. indā. RV. 5, 62, 9. Çāñh. Çat. 17, 3, 6, 5, 7. 13, 5. अतिविहं *durchbohrt, getroffen* MBh. 6, 2701. वागिषुभि: R. 2, 9, 54. वाक्चेन मक्ताप्रियेण धेरेण रुदये R. Gora. 2, 9, 46. — Vgl. अतिव्याधिन्, अनतिव्याध्य.

— व्यति *durchbohren, durchschießen*: नाराचैर्व्यतिविहाना शराणाम् MBh. 7, 8626 nach der Lesart der ed. Bomb.

— अनु 1) *hinterdrein durchbohren, — verwunden*: विहमनुविध्यत: M. 9, 43. — 2) *durchbohren, treffen* (mit einem Geschosse): अनुविह R. 5, 86, 42. कामशरानुविह R. 4, 11. 6, 15. कीटानुविहर्त्तादि *durchbohrt, angebohrt* Sāh. D. 3, 21. — 3) *durchsiehen, mit Etwas erfüllen*: मृत्तिका तद्रसेनानुविध्यमामा Baig. P. 5, 16, 21. अनुविहं *durchsogen, besetzt mit, erfüllt —, begleitet von*: सरसिप्रमनुविहं शैवलेनापि रम्यं Spr. 2890. इन्द्रमीलैर्मुक्तामपी यष्टिरिवानुविह Ragh. 13, 54. रत्नानुविहाङ्गद 6, 14. रत्नानुविहार्षव 68. स्वेदानुविहार्षनखतत 16, 48. अलकं बालकुन्दानुविहम् Megh. 66. सान्द्रकफानुविह Suca. 2, 491, 18. (हेमा!) कौस्तुभानुविहा: Hariv. 8793. रत्नाङ्गुलीयप्रभयानुविहानतान् Ragh. 6, 18. न तत्सत्पथे यच्छलेनानुविहम् Spr. (II) 3483, v. l. सौरभयानुविह Majīm. 14, 21. KATHA. 115, 146. MĀLATI. 18, 13. काष्ठगतलेकरसानुविह (भाव) Komāras. 3, 25. रजसा तमसानुविहो मद: Baig. P. 5, 10, 9. सुखानुविह Verz. d. Oxf. H. 216, 6, 80. — 4) *anstacheln, antreiben*: तेनानुविह: Baig. P. 3, 26, 51. कर्मस्वनुविहया धिया 28, 8. — Vgl. अनुवेध.

— अप 1) *fortschleichen, fortziehendern, fortwerfen*: अप शत्रून्विध्य-